संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ३६ ● ०३ अक्टूबर २०१७ आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

गाजियाबाद जिला आर्य महासम्मेलन - सारा, मोदीनगर में सम्पन्न

वैदिक परम्परा एवं मर्यादा के पर्याय थे श्रीराम - आर्य समाज की मान्यता

- डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

गाजियाबाद जिला आर्य महासम्मेलन सारा मोदीनगर में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम को आर्य समाज मानता है कि वो वैदिक परम्परा एवं मर्यादा के पर्यायवाची थे। वे सच्चे आर्य पुत्र थे वे यज्ञों के रक्षक थे छोटी आयु से लेकर सदैव यज्ञरक्षक बनकर रहे। ये विचार गाजियाबाद जिला आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ग्राम पंचायत सारा मोदी नगर में व्यक्त किये उन्होंने बताया इस वर्ष विजया दशमी का विशेष महत्व इसलिए रहा है वैदिक परम्परा के इस वर्ष विजयादशमी का विशेष महत्व इसलिए रहा है कि राजनीति और सामाजिक व्यवस्था को तो आन्दोलन कर ही रखा है, इसकी प्रतिक्रिया अनेक देशों में हुई है। आर्य समाज प्रतिमा--पूजन का विरोधी होते हुए भी श्रीराम में आस्था रखने वालों के इस प्रयास का इसलिए समर्थन कर रहा है कि यह वर्षों पहले किये गये अन्याय--अत्याचार के प्रतिरोध का प्रतीक है। श्री रामचन्द्र ने भी अपने युग में अन्याय-- अत्याचार और अविचार का प्रतिकार करने के लिए संबल रहित रहते हुए भी कतिपय वन्यजातियों के सहयोग से भीषण संघर्ष कर इन अवगुणों व अविवेकपूर्ण आचारण के मूर्तिमान स्वरूप रावण का परिजनों सहित संहार कर राष्ट्र और समाज के सामने अनुकरणीय आदर्श रखा था। इसीलिए वह इतिहास पुरूष बन गये।

रावण पर विजय प्राप्त कर तो श्री राम ने अक्षय कीर्ति पायी ही, किन्तु उनके वे आदर्श अधिक अनुकरणीय हैं, जिनकी स्थापना कर उन्होंने मर्यादा पुरूषोत्तम की ख्याति पायी और जिनसे उनके प्रति आस्था रखने वालों ने उनको समाज में भगवान के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। श्री राम को भगवान् का अवतार न मानने वालों को भी वे मर्यादाएं अनुप्राणित करती हैं, जिन्हें उन्होंने समाज मे सुसंस्कार एवं सुव्यवस्था लाने के लिए स्थापित किया। एक पत्नीव्रत, पितृभक्ति, भ्रातृप्रेम, सत्ता के प्रति निस्पृहता, सामाजिक समता, प्रजारंजन सरीखे सद्गुणों ने भी श्रीराम को युग का ऐसा विशिष्ट एवं अप्रतिम पुरूष बना दिया जिसने सुख--सम्पदा एवं सौहार्द पूर्ण राज्य की तो स्थापना की ही, भावी पीढ़ियों के लिए भी ऐसा मार्ग प्रशस्त कर दिया, जिस पर चल कर राष्ट्र एवं समाज जनकल्याणकारी बन सकता है।

सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने शिक्षा और संस्कृति सम्मेलन में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने श्री राम एवं श्रीकृष्ण को इसलिए महापुरूष माना कि उन्होंने

अपने आदर्श चरित्र और कर्त्तव्य पालन से समाज की व्यवस्था को सुधारने का प्रयास तो किया ही अपने जीवन को भी--

धृति, क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रय निग्रह।
धीर्विद्या सत्यमंक्रोधो दशकं धर्म लक्षणं।।

की शास्त्रीय कसौटी पर खरा सिद्ध किया। कतिपय अविवेकी कालियों ने उनके जीवन के सम्बन्ध में नानाप्रकार की धारणाएं फैलाकर उनके जीवन चरित्र को लांछित करने का प्रयास किया है, उससे इन महापुरुषों का कुछ नहीं बिगड़ा समाज का ही अहित हुआ है।

शास्त्रकारों ने "मान्यस्मा कम् सुचरितानि तानि तवयोपास्यानि नेतराणि" की व्यवस्था करके जो मार्गदर्शन किया है, उसको भी इन अविवेकी कर्त्तव्यों ने ध्यान में नहीं रखा। जिनको एक तरफ भगवान बनाने की चेष्टा की गयी उन्हीं की गरिमा एवं गौरव को धूमिल करने का यह दुष्प्रयाय निश्चय ही निन्दनीय माना जायेगा।

"यान्यास्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नेतराणि" राम शिक्षा और संस्कृति के उपासक थे वे सदैव मानव समाज के लिए प्रेरणा के पुञ्ज रहेगें। अध्यक्षता प्रि० चन्द्रशेखर ने की संयोजन प्रमोद चौधरी ने किया सभा में कु० अञ्जली आर्या के भजन एवं विष्णुमित्र वेदार्थी के भी भाषण हुए। जिलाध्यक्ष मा० ज्ञानेन्द्र सिंह जिलामंत्री तेजपाल सिंह आर्य सत्यवीर चौ० ने सभा प्रधान जी एवं सभा मन्त्री का स्वागत किया। कार्यक्रम में पूरे जिले के हजारों कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया जिसमें मुख्य रूप से श्री श्रद्धानन्द जी शर्मा श्री आर० डी० गुप्ता, मोदीनगर से श्रीगोपाल आर्य, सत्यवीर आर्य सुरेन्द्र सिंह चौधरी मुरादानगर गाजियाबाद की समाजों से मातायें भी भारी संख्या में आर्य समाज सारा के प्रधान मंत्री श्री फकीरचन्द्र कोषाध्यक्ष श्री संजय शर्मा मन्त्री श्योराज सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। महत्मा देवमुनि जी ने आशीर्वाद दिया।

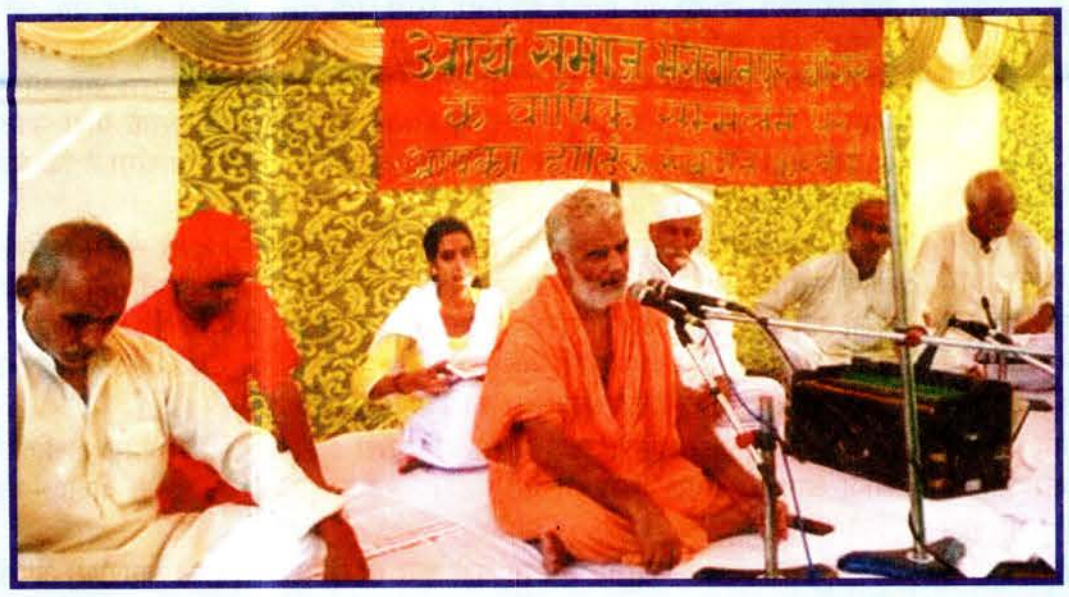

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

महर्षि दयानन्द विश्व को फिर याद आये

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व को एक परिवार के रूप में देखना चाहते हैं। सभी का कल्याण एवं सभी का उत्थान करना चाहते हैं। प्रत्येक आबाल वृद्ध उनके विचारों को स्वीकार कर लेवे तो पूरी दुनियां में सुख–शान्ति की स्थापना निश्चित हो सकती है। गत शताब्दी में समाज का परिवर्तन हुआ। शिक्षा, संस्कार संसकृति, सभ्यता, विज्ञान के युग में भयंकर परिवर्तन हुआ है लेकिन स्वामी जी द्वारा स्थापित मानवीय मूल्यों में सिद्धान्तों एवं नियमों में काई वैज्ञानिक विद्वान, पन्थ मजहब, सम्प्रदाय वादी महन्त अथवा कोई पादरी धार्मिक नेता किसी शब्द को स्वयं तो स्वीकार कर लिया होगा लेकिन कोई उसे पृथक् नहीं कर सका यह उनकी सांस्कृतिक दिग्विजय हैं। आर्य समाज की जिम्मेदारी इस रूप में भी देखी जा सकती है जिसमें पूरे संसार के उपकार करने की भावना प्रदान की गई है आर्य के १० नियम बनाकर अपना उद्देश्य संकल्प के रूप में प्रतिष्ठित किया है उसके छठे नियम में स्वामी जी लिखते हैं कि –''संस्कार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक आऔर सामाजिक उन्नति करना''।

यह अकेला नियम ही पर्याप्त है। जो महर्षि के उदार हृदय का परिचायक है। इसमें ''वसुधैव कुटुम्बकमं की भावना निहित है। वेद के आदेशानुसार एक सन्देश प्रसारित करते हैं कि ''कृण्वन्तोविश्वमार्यम्'' पूरे संसार को श्रेष्ठ समाज बनाओ उनका कोई व्यक्तिगत चिन्तन नहीं था वैश्विक विचारधारा से विश्व के सभी आबाल वृद्ध को परिचित कराना चाहते हैं उनका जीवन इसी परम्परा के प्रचार–प्रसार में संलग्न रहा वे बड़े स्पष्ट शब्दों में उद्घोषणा करते हैं कि '' मेरा कोई मतमतान्तर चालने का उद्देश्य नहीं है मैं तो सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि पर्यन्त ऋषि जो मानते आये हैं, मैं उसे यथावत् मानता और मनवाना अभीष्ट समझता हूँ, अपनी ओर से कोई नया सम्प्रदाय बनाना नहीं चाहते और जो बातें वेदों की शिक्षा से संसार में स्थापित करना चाहते थे वे सत्यार्थ प्रकाश तथा संस्कार विधि में स्पष्ट करके व्यक्तिगत जीवन निर्माण की परिकल्पना करके भारत के सुयोग्ज स्नातक वेदों का विद्वान् होकर ब्रह्मचर्य से तेजस्वी बनाकर सार्वभौम चक्रवर्ती सम्राट के पद पर अभिसिक्त हो ऐसा स्वप्न महर्षि जी ने देखा था आज हम उसे समझ ही नहीं पाये हमारे नेता उधर क्रियान्वित करने की दिशा में सोच नहीं बना पाये और राजनीति से प्रभावित होकर स्वयं एकांगी बन गए। उसमें उदारता–विशालता का अभाव रहा अन्यथा इतने समय में यदि हमारा आलस्य हमें उदासीन न करता तो आज पूरे विश्व में वैदिक सन्देश से प्रभावित जनमानस होता। वर्षा ऋतु की तरह जो अनावश्यक पौधे अंकुरित होकर असली फसल पर अपने प्रभाव से उसे कमजोर करके स्वयं प्रभावी हो जाते हैं वहीं स्थिति आज आर्य समाज एवं अन्य सम्प्रदायों की है। राम रहीम, सन्तरामपाल दास अथवा आशाराम जो एक प्रतीक बने हैं ऐसे तो पता नहीं हजारों हजारों प्रकार के पौधे समाज में सम्प्रति प्रभुसत्ता की जगह अपनी स्वतन्त्र सत्ता जमाये बैठे हैं। जब उन्हें लगता है कि कहीं हमारा भी क्रम इधर न आ जाये सरकार कही हमारी जाँच न कर बैठे तब उन्हें महर्षि दयानन्द जी याद आने लगते हैं। क्योंकि वही ऐसी ढाल है जो विश्व में हमें सुरक्षित रख सकती है। अभी श्री श्री रविशंकर जी महाराज का भाषण मैं टी.वी. का जादू सबके सिर पर चढ़ेगा सबके अन्तःकरण को यदि पवित्रता होगी तो वह महर्षि दयानन्द जी ही कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि यदि समाज को बचाना है समाज में भावी पीढ़ी को सुरक्षित रखना है यदि परिवार का निर्माण करना है तो महर्षि दयानन्द जी की संस्कारविधि के आधार पर ही सम्भव है। यह एक चमत्कार है। हम आर्यों के लिए भी एक सन्देश है कि हम भी उस संस्कार विधि को स्वयं नहीं पढ़ पाते क्योंकि आधुनिकता की दौड़ में हम पीछे रहने में अपना अपमान अनुभव करने लगे हैं संस्कार विधि मात्र हमने समझा है कि इसे तो पुरोहित पढ़ेगा उसे ही संस्कार कराना है। पुरोहित इसलिए नहीं पढ़ते कि उनसे कोई सब संस्कार कराता नहीं अतः नामकरण, विवाह और अन्येष्टि तक ही पुरोहित संक्षिप्त हो गए है इसमें भी समयाभाव है अतः मात्र खानापूर्ति से कार्य चल जाता है अब बाताओ १६ से ३ रह गए हैं उसमें भी अब पुरोहित की कोई मुख्य भूमिका नहीं रहती मात्र मन्त्रपाठ किया शीघ्रता है दोनों को ही यजमान को भी है पुरोहत को कहीं अन्यत्र जाना है अतः कार्य ठीक चल रहा है कु० सुखलाल जी कहा करते थे कि न तुम्हें वख्त है न मुझे वख्त है इसलिए मैं भी कमवख्त हूँ और तुम भी कमवख्त हो मुझे लग रहा इस भाग दौड़ में हम महर्षि की भावनाओं से कितने दूर चले गए हैं। जब समाज टूट रहा है धर्मगुरू समाज को खोखला कर रहे हैं। परिवारों में पिता–पुत्र, पति–पत्नी आदि सम्बन्ध मधुरता की जगह खट्टे हो रहे है, तब हमें महर्षि दयानन्द जी ही बचा सकते हैं अतः आज आप संकल्प लेवें कि स्वयं परिवार, समाज, राष्ट्र निर्माण के लिए मुझे संस्कारविधि पढ़कर उसके अनुसार अपने जीवन का निर्माण कर परिवार से राष्ट्र पहुंचने का व्रत धारध करता हूँ तभी यह दीपावली का पर्व हमारे जीवन और समाज में प्रकाश पुञ्ज प्रदान कर सकता है। प्रभो! हमें ऐसी सद्बुद्धि प्रदान कराना जो हमारा कल्याण कर सकें।

- सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्थ समुल्लासारम्भः

अथ समावर्त्तनविवाहगृहाश्रमविधिं वक्ष्यामः

ऋतुकालाभिगामी स्यात्स्वदारनिरतः सदा।
ब्रह्मचार्य्येव भवित यत्र तत्राश्रमे वसन्।। मनु०।।

जो अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और ऋतुगामी होता है वह गृहस्थ भी ब्रह्मचारी के सदृश है।

सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कलयाणं तत्र वै ध्रुवम्।।१।।
यदि हि स्त्री न रोचेत पुमांसन्न प्रमोदयेत्।
अप्रमोदात्पुनः पुंसः प्रजनं न प्रवर्त्तते।।२।।
स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते।।३।। मनु०।।

जिस कुल में भार्य्या से भर्त्ता और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती है। उस कुल में सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं। जहाँ कलह होता है वहाँ दौर्भाग्य और दारिद्रय स्थिर होता है।।१।। जो स्त्री पति से प्रीति और पति को प्रसन्न नहीं करती तो पति के अप्रसन्न होने से काम उत्पन्न नहीं होता।।२।। जिस स्त्री की प्रसन्नता में सब कुल प्रसन्नता में सब कुल प्रसन्न होता है। उसकी अप्रसन्नता में सब अप्रसन्न अर्थात् दुःखदायक हो जाता है।।३।।

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः।।१।।
यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः कियाः।।२।।
शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा।।३।।
तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः।
भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च।। ४।। मनु०।।

पिता, भाई, पति और देवर इन को सत्कारपूर्वक भूषणादि से प्रसन्न रक्खें, जिन को बहुत कल्याण की इच्छा हो वे ऐसे करें।।१।। जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उस में विद्यायुक्त पुरुष होके देवसंज्ञा धरा के आनन्द से क्रीड़ा करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल हो जाती हैं।।२।। जिस घर वा कुल में स्त्री लोग शोकातुर होकर दुःख पाती है वह कुल शीघ्र नष्ट भ्रष्ट हो जाता है और जिस घर वा कुल में स्त्री लोग आनन्द से उत्साह और प्रसन्नता से भरी हुई रहती हैं वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।।३।। एसलिए ऐश्वर्य की कामना करनेहारे मनुष्यों को योग्य है कि सत्कार और उत्सव के समयों में भूषण वस्त्र और भोजनादि से स्त्रियों का नित्यप्रति सत्कार करें।।४।। यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिये कि 'पूजा' शब्द का अर्थ सत्कार है औरदिन रात में जब–जब प्रथम मिलें वा पृथक् हों तब–तब प्रीतिपूर्वक 'नमस्ते' एक दूसरे से करें।

क्रमशः अगले अंक में ....

प्रेरक प्रसंग -

दूषित मानसिकता

दो मित्र साधु कहीं मार्ग पर चल रहे थे। कुछ चलकर रास्ते में एक नदी पड़ी। उसे पार करना था। पानी कमर से ऊपर बह रहा था। पानी का बेग कुछ अधिक ही था। साधु मित्र अपने–अपने कपड़ें ऊपर सँभाल रहे थे और पार जाने की तैयारी कर ही रहे थे। तभी कुछ चिन्तित मुद्रा में वही पर एक महिला भी आ गई जो कद–काठी की हल्की थी। वह स्वयं नदी पार करने में सक्षम नहीं थी। उसका गाँव नदी पार ही था और बेटा गाँव नदी पार ही था और बेटा गाँव में बीमार था। इसलिए उसे जल्दी थी और चिन्ता भी महिला ने उन साधुओं से कहा– ''महात्मा जी! मेरा पुत्र अत्यन्त बीमार पड़ा है। मुझे उसके पास जाना आवश्यक है। मैं अकेले नदी पार नहीं कर सकती, अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे नदी पार करा दीजिएगा।''

यह सुनकर एक साधु तो नाक–भौंहें सिकोड़ने लगा। दूसरे ने उस महिला को तुरन्त ही अपनी पीठ पर रखकर नदी पार करा दिया। वह अपने गाँव की ओर चली गई और साधु अपने रास्ते चलने लगें। महिला को पीठ पर रखकर पार कराने वाले साधु से वह दूसरा साधु बोला – ''छिः–छिः! तुम अपवित्र हो गए हो, तुमने महिला को छू डाला। साधुओं को स्त्री स्पर्श वर्जित है।''

यह सुनकर दूसरा साधु बोला ''मित्रवर! क्षमा करें। मुझे शोक है कि मैं आज आप जैसे एक मित्र को खो बैठा।'' वह उलाहना देने वाला बोला –वह कैसे?''

उत्तर मिला–''सुनो! मैंने तो उसे कुछ ही मिनटो को (परोपकारार्थ) अपनी पीठ पर बिठाया था, परन्तु वह महिला तुम्हारे मस्तिष्क में प्रवेश कर चुकी है। अब तुम्हें रात–दिन वही दीखती रहेगी और तुम बेचैन रहोगे। तुम्हारी मानसिकता दूषित हो गई है।''

धरोहर

कन्या गुरूकुल चोटीपुरा की आचार्या सुमेधा जी एवं सुकामा जी

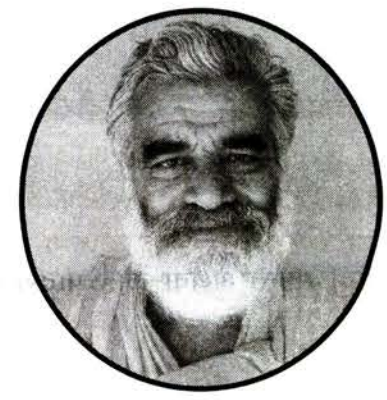

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते तत्र सर्वाक्रिया फलाः।।

महर्षि मनु ने सत्यार्थ प्रकाश में यह श्लोक उद्घृत करके यह बताने का प्रयास किया कि यदि धनवान बनाना है तो मातृशक्ति का सम्मान करो। मातृ शक्ति की पूजा करो। ''पूजनं नाम सत्कारः'' इससे समाज की भावी पीढ़ी में सतोगुण एवं सद्व्यवहार से आत्मिक उन्नति तथा आत्मीय प्रसन्नता का वातावरण बनेगा। बच्चों में योग्यता प्राप्त करने की ऊहा जागृत होगी, जहाँ विपरीत व्यवहार होगा, वहां सब कार्य असफल होकर समरसता समाप्त हो जायेगी। आज समाज में सर्वत्र दिखाई दे रहा है। इसे कलियुग का नाम देकर हम पीछा छुड़ा लेते हैं। यथार्थ में कलियुग अथवा शनिवार को सब कार्य क्या विकृत ही होते हैं? इससे पूर्व भी कितने कलियुग आ गए लेकिन जो वेदानुयायी हैं। वे इसे सतयुग जैसा वातावरण बना सकते हैं। आपको कहीं अन्यत्र दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। इसी भारत वर्ष के उत्तम प्रदेश के अमरोहा जनपद में गजरौला, मुरादाबाद मार्ग पर रजबपुर के निकट उत्तर दिशा में मात्र २ कि०मी० की दूरी पर जंगल में एक आश्राम है साधना स्थली। एक निर्माण केन्द्र है एक सतयुग का जीता जागता उदाहरण है, जिसे समाज में कन्या गुरूकुल चोटीपुरा के नाम से लोग पुकारते हैं। वहां दो आचार्या हैं लगता है कि शरीर दो हैं पर उनमें आत्मा जैसे एक ही है। उनका जीवन, उनका चिन्तन, उनका त्याग, उनका पुरूषार्थ उनकी योग्यता, उनकी सरलता, सादगी, सच्चरित्रता संकल्प शक्ति, साधना, विद्या आदि–आदि सद्गुणों को एक स्थान पर संगृहीत करके मानो ब्रह्मा (सृष्टा) ने उन्हें निर्मित किया है। तभी तो नाम सुमेधा और सुकामा रक्खा गया अच्छी मेधाबुद्धि से अच्छा काम करने की क्षमता प्राप्त करने की पवित्र भावना से परिपूर्ण जीवन है जिनका उस नाम को सार्थक करके आज समाज में सम्मान को प्राप्त किया है। २७ सितम्बर को सांसद जी द्वारा शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। उसमें लगभग ८५०० आचार्यों शिक्षकों को सम्मानित किया गया। संयोग से प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी का जन्म दिन भी था। सांसद कुंवर सिंह तंवर जी ने मुझे भी आमन्त्रित किया था। मैंने आकर भव्य दृश्य देखा। मुझे कुछ बालने का समय मिला। मैंने वहां के वातावरण से कन्या गुरूकुल की छात्राओं की विद्या एवं संस्कारों से तथा बहिन सुमेधा जी सुकामा जी के लम्बे संघर्ष मय जीवन की तपस्या के परिणाम के प्रभाव से मैं अपने को आज उनकी प्रशंसा में कहने का साहस कर रहा हूँ। जो समुद्र में एकविन्दुवत् है। आश्य है दोनों बहिनें स्वीकार करेगीं।

आचार्य सुमेधा जी का जन्म चोटीपुरा ग्रामा में ही श्री चौहर गोविन्द सिंह जी आर्य के घर पर हुआ भाई चेतन आर्य सहित ही परिवार में भाई–बहिन हैं इनके पिता श्री बड़े धार्मिक और उत्साही पुरूषार्थी व्यक्तित्व थे। आर्य सामज का प्रचार–प्रसार ग्राम में होता रहता था। लालसिंह आर्य इनके सहयोगी रहे। अमरोहा तथा आस–पास कहीं भी उत्सव होते तो वे अवश्यमेव जाया करते थे। रामस्वरूप सिंह आर्य मन्त्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद एक आदर्श शिक्षक थे जो इनके फूफा जी होते थे। स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तत्कालीन पूज्य आचार्य भगवान देव जी गुरूकुल झज्जर लड़को के लिए खोला कन्या गुरूकुल नरेला लड़कियों के लिए, स्वामी ओमानन्द सरस्वती दोनों गुरूकुलों का संचालन कर रहे थे। मंत्री रामस्वरूपी जी की सुपुत्री सरस्वती आर्या तथा आचार्या सुमेधा जी जी के साथ अन्य छात्राएं गुरूकुल में प्रविष्ट हुई तभी मेरा भी परिचय से मन्त्री जी से हो गया था अमरोहा फिर वह परिचय आत्मीय परिवार में परिवर्तित हो गया। सुमेधा जी के पूज्य पिता श्री हरगोविन्द सिंह जी गन्ने द्वारा गुड़ बनाने का क्रेशर चलाने लगे और गुड़ हापुड़ की मण्डी में ले जाते समय निकालकर निकट गुरूकुल ततारपुर में आकर स्नान–यज्ञ एवं भोजनादि समयानुसार कर लिया करते थे। पुत्रियों की पढ़ाई पूरी होने पर क्या भविष्य होगा इसी चिन्तन में मन्त्री जी ने कन्या गुरूकुल खोलने का मन बना लिया। आर्य साथियों को लेकर बैठक में योजना बनाई कैसला के पास ग्राम अवधपुरी में कन्या गुरूकुल का प्रचार हुआ। शिलान्यास हुआ वृहद् कार्यक्रम हुआ मैं भी उसमें उपस्थित रहा चौ० चरण सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती माता गायत्री देवी जी तथा स्वामी ओमानन्द जी जैसे बहुत विद्वान् सन्यासी भी पधारे थे बड़ा भारी उत्साह था पर प्रभु को वह स्वीकार्य नहीं हुआ।

स्वातिका बनने पर आ० सुमेधाजी के साथ सुकामा जी आई आपका जन्म स्थान रोहतक जिले में है। आपके पिता चौ० राजेन्द्र सिंह आर्य सच्चे पुरूषार्थी और महर्षि दयानन्द जी के अन्यत्र भक्त थे। सदैव ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' को सार्थक करना चाहते थे तभी तो अपनी सुयोग्य सुपुत्री आचार्य एम०ए० पी०एच०डी० करने के बाद समाज सेवा हेतु समाज निर्माण के लिए सहर्ष उसे गुरूकुल संचालन की आज्ञा दे दी।

इधर आ० सुमेधा जी के पिता श्री ने भी भाई चेतन जी से परामर्श करके अपनी निजी भूमि को कन्या गुरूकुल के लिए दान कर दिया था अपनी सुयोग्य सुपुत्री को उसके संचालन हेतु अपने संरक्षण में नियुक्त कर लिया वे स्वयं लाठी लेकर जंगल में रक्षार्थ सजग रहते थे गुरूकुल की प्रारम्भिक स्थिति विश्वास जीतने के लिए परीक्षा की घड़ी होती है उसमें दोनों बहिनों ने पूर्व परीक्षाओं की तरह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्णता प्राप्त की और समाज को शिक्षित करने का संकल्प ले लिया। बाह्य रूप में भवन–साधन भूमित था साज सज्जा के साथ–साथ फुलवाड़ी वृक्षों की शेभा देखते ही बनती है। आन्तरिक व्यवस्था में आ० सुकामा जी द्वारा अनुशासन कठोर नियन्त्रण तथा पठन–पाठन को व्यवस्थित किया है। यहां का वातावरण देखते ही सतयुग में किसी आश्रम की कल्पना की जा सकती है। बहिन सुमेधा जी पूरे देश में वेद पाठ एवं प्रवन्ता के लिए स्वामी दीक्षानन्द जी के माध्यम से जाया करती थी। फिर स्वयं इतना परिचय हो गया है कि अब समय नहीं मिल पाता। स्वामी रामदेव जी का आशीर्वाद भी खूब फल फूल रहा है। वे यदा–कदा इधर आते–जाते तथा वहां भी कार्यक्रमों में बहिन जी का सहयोग लेते रहते हैं।

आज आर्य जगत् में जितने भी कन्या गुरूकुल है, उनमें सर्वोत्तम श्रेष्ठतम गुरूकुल चोटीपुरा है मेरे पड़ोस में है ऐसा नहीं है मैं इसकी आधार शिला से लेकर आज तक के सभी कार्यक्रमों तथा विकास का सदैव साक्षी रहा हूँ इस नाते भी नहीं मैं स्वतः आपको निमन्त्रण भी देता हूँ कि एक बार आकर देखो आपको स्वतः यहाँ का परिचय मिल जायेगा।

यहाँ की छात्रायें आत्म बल, बौद्धिक बल, शारीरिक बल सर्वांगीण विकास में अग्रणी है। आसन–संचालन, जुड़ो कराटे लाठी, तलवार के अलावा विभिन्न प्रकार के व्यायाम सिखाया जाता है झाँसी की रानी की तरह लगती हैं मल्लखम्भा के आसा देखकर आप चकित रह जायेगें मैं स्वयं कई सम्मेलनों में जाकर देख चुका हूँ इसी शिक्षक सम्मान में मैंने कहा कि यहाँ हजार से लेकर एक लाख रूपये तक मासिक वेतन लेने वाले शिक्षक बैठे हैं लेकिन निःशुल्क बिना वेतन लिए जो शिक्षा बहिन सुमेधा–सुकामा जी दे रही हैं वह सर्वोत्तम सर्वोपरि और सबके लिए प्रेरणाप्रद है। असली सम्मान तो ऐसे आचार्यों का ही होना चाहिए। छात्राओं के गीत एवं भाषण–वेदपाठ सभी प्रशंसा के योग्य हैं।

जीवन में सतत् संघर्ष ही सफलता का मार्ग प्रशस्त कर व्यक्तित्व को आकर्षक बनाता है

– सीता राम गुप्ता

नदी पहाड़ों की दुर्गम व दीर्घकालीन यात्रा के उपरांत तराई में पहुंची तो अपेक्षाकृत शांत व संयत दिखलाई देने लगी। उसके दोनों ही किनारों पर गोलाकार, अण्डाकार व बिना किसी निशिचित आकार के असंख्य पत्थरों का ढेर सा लगा हुआ था। इनमें से दो पत्थरों में परस्पर परिचय बढ़ने लगा। दोनों एक दूसरे से अपने मन की बातें कहने–सुनने लगे। इनमें से एक पत्थर एकदम गोल–मटोल, चिकना व अत्यंत आकर्षक था जबकि दूसरा पत्थर बिना किसी निशिचित आकार के, खुरदरा व अनाकर्षक था। एक दिन इनमें से बेडौल, खुरदरे व अनाकर्षक पत्थर ने गोल–मटोल, चिकने व आकर्षक पत्थर से पूछा, '' हम दोनों ही दूर ऊँचे पर्वतों से बहकर आए हैं फिर आप इतने गोल–मटोल, चिकने व आकर्षक क्यों हो जबकि मैं नहीं? गोल–मटोल, चिकने व आकर्षक पत्थर ने जवाब दिया, ''भाई मैं निरंतर कई सालों तक बहता और लगातार टूटता व घिसता रहा हूँ तब कहीं जाकर मैंने ये रूप पाया हैं। तुम्हें अभी और संघर्ष करना है और निरंतर संघर्ष करते रहे तो एक दिन तुम मुझसे भी अधिक सुंदर, गोल–मटोल, चिकने व आकर्षक बन जाओगे।''

हाँ वर्षों तक निरंतर संघर्ष व कठोर परिश्रम के कारण ही कोई अनगढ़ चट्टान का टुकड़ा गोल–मटोल, चिकना व आकर्षक पत्थर बन पाता है। जिस प्रकार से एक पत्थर निरंतर संघर्ष के कारण एक सुंदर आकार व मसृणता प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार से जीवन में सतत् संघर्ष के कारण ही किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व आकर्षक बन पाता है और निरंतर संघर्ष व परिश्रम की आदत के कारण सफलता का मार्ग भी प्रशस्त होता है। जो लोग जीवन में किसी सामान्य से आघात से ही टूटकर बिखर जाते हैं वो आगे कैसे बढ़ सकेंगे? जीवन निरंतर संघर्ष का नाम ही तो है। संघर्षों से मुक्ति नहीं अतः संघर्षों को स्वीकार कर उन्हें सहने की आदत डाले बिना हम आगे बढ़ना तो दूर अपना अस्तित्व भी नहीं बचा पाएंगे। जब हम निरंतर संघर्ष करते हैं तो हममें सहिष्णुता उत्पन्न होती है। जब मनुष्य में सहिष्णुता का विकास हो जाता है तो वो विषम से विषम परिस्थितियों में भी मनचाहा कार्य कर सकता है। इससे संघर्ष, सफलता, आत्मविश्वास व प्रेरणा का ऐसा चक्र निर्मित हो जाता है जो उसे सदैव संघर्षरत व सफल बनाने में सहायता करता है।

हम सबका जीवन किसी न किसी मोड़ पर कमोबेश असंख्य दूसरे अभावग्रस्त अथवा संघर्षशील लोगों जैसा ही होता है। मेरे ही जीवन में अभावाधिक्य रहा है। संघर्षशील लोगों जैसा ही होता है। मेरे ही जीवन में अभावाधिक्य रहा है अथवा मैंने ही जीवन में सर्वाधिक संघर्ष किया है और ऐसी परिस्थितियों में मेरे स्थान पर दूसरा कोई होता तो वो सब नहीं कर सकता था जो मैंने किया यह सोचना ही बेमानी, वास्तविकता से परे व अहंकारपूर्ण है। कई लोगों का कहना है कि यदि उनके जीवन में ये तथाकथित बाधाएं अथवा समस्याएं न आई होतीं तो उनका जीवन कुछ और ही होता। प्रश्न उठता है कि यदि जीवन ऐसा नहीं होता तो फिर कैसा होता? यहां एक बात तो स्पष्ट है कि यदि परिस्थितियां भिन्न होती तो जीवन भिन्न होता लेकिन ऐसा नहीं होता जैसा आज है। लेकिन जैसा आज है क्या वह कम महत्त्वपूर्ण अथवा महत्त्वहीन है? क्या ऐसे जीवन की कोई सार्थकता अथवा उपयोगिता नहीं? क्या संघर्षमयता स्वयं में जीवन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि नहीं? इसका उत्तर तो हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

संघर्षों से जूझने वाला बहादुर तथा पलायन करने वाला कायर कहलाता है। अभाव और संघर्ष हमारे जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा होते हैं अतः हमारे चरित्र निर्माण अथवा चारित्रिक विकास में बड़े सहायक होते हैं। जो अभावों तथा संघर्षों की आंच में तपकर बड़े होते हैं अथवा निकलते हैं वह उन लोगों के मुकबले में महान होते हैं। जिन्होंने जीवन में कोई संघर्ष किया ही नहीं। अभाव और संघर्ष जीवन की गुणवत्ता को नए आयाम प्रदान करते हैं। संघर्षशील व्यक्ति अपने जीवनकाल में अथवा संघर्ष के बाद के शेष जीवन में बिना किसी भय के अडिग रह सकता है जबकि संघर्षविहीन व्यक्ति बाद के जीवन में अभाव अथवा दुख के एक हलके से आघात अथवा झोंके से धराशायी हो सकता है। जिनके जीवन में अभाव अथवा संघर्ष की कमी होती है उन्हें आगे बढ़ने के लिए अथवा स्वयं का विकास करने के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है जिसकी उन्हें आदत नहीं होती।

वास्तविकता ये भी है कि अभावों में व्यक्ति जितना संघर्ष करता है सामान्य परिस्थितियों में कभी नहीं करता। अभाव एक तरह से व्यक्ति के उत्थान के लिए उत्प्रेरक का कार्य करते हैं, उसके विकास की सीढ़ी बन जाते हैं। अभावों से जूझने वाला संघर्षशील भी होता है। परिस्थितियां एक संघर्षशील व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से ऐसे गुण पैदा कर देती है। संघर्ष चाहे स्वयं के लिए किया जाए अथवा दूसरों को आगे बढ़ाने व उनके हितों की रक्षा करने के लिए संघर्ष के उपरांत सफलता मिलने पर खुशी होती है। यही खुशी हमारे अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि में सहायक होती है। हमारी खुशी का हमारे स्वास्थ्य से और स्वास्थ्य का हमारी भौतिक उन्नति से सीधा संबंध है। संघर्ष व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

सफ़र में थोड़ी बहुत दुश्वारियां न हों तो घर पहुंचकर साफ़–सुथरे बिस्तर पर आराम करने का आनंद संभव नहीं। इसी प्रकार अभाव की पूर्ति होने पर जो आनंदानुभूति होती है वह अभाव की अनुभूति के बिना संभव नहीं। अभाव व संघर्ष द्वारा ही यह संभव है। संघर्षों का नाम ही जीवन है। जीवन में संघर्ष न हों तो जीने का मज़ा ही जाता रहता है। उर्दू शायर असग़र गोंडवी तो जिंदगी की आसानियों को ज़िंदगी के लिए सबसे बड़ी बाधा मानते हुए कहते हैं–

चला जाता हूँ हँसता खेलता मौजे–हवादिस से,
अगर आसानियां हो जिंदगी दुश्वार हो जाए।

जीवन में आनंद पाना है तो स्वयं को संघर्षों के हवाले कर देना ही श्रेयस्कर है। संघर्ष रूपी कलाकार की छेनी आपके अस्तित्व रूपी पत्थर को तराशकर एक सुंदर प्रतिमा में परिवर्तित करने में जितनी समक्षम होती है अन्य कोई नहीं। मिर्ज़ा 'गालिब' जीवन में विषम परिस्थितियों से उत्पन्न हालात को एक दूरदर्शी व्यक्ति के लिए उस्ताद या गुरू के तमाचे अथवा थप्पड़ की तरह मानते हुए कहते हैं–

अहले–बीनिश को है तूफ़ाने–हवादिस मक्तब,
लत्मा–ए–मौज कम अज़ सीली–ए–उस्ताद नहीं।

हम स्वयं अपने जीवन को रोमांचक, चुनौतीपूर्ण और साहसी बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रख छोड़ते। खतरों के खिलाड़ी कहलवाने में गौरव का अनुभव करते हैं। इससे हमें खुशी मिलती है। लेकिन यदि हमें कोई चुनौती प्राकृति रूप से मिल जाती है तो उसे स्वीकार करने अथवा उसके पार जाने में दुविधा क्यों? अभावों तथा संघर्ष को अन्यथा मत लीजिए। उन्हें महत्व दीजिए। किसी भी चुनौती को स्वीकार किए बिना उसे जीतना और विजेता बनना असंभव है। संघर्ष हर जीत को संभव बना देता है। संघर्ष दुख नहीं, दुख से बाहर आने का प्रयास होता है। दुख से बाहर आने का प्रयास होता है। दुख से बाहर आने का अर्थ है सुख, प्रसन्नता अथवा आनंद। संघर्ष आनंद का ही उद्गम है।

जहाँ तक आकर्षक व्यक्तित्व का प्रश्न है कठिन संघर्ष व परिश्रम करने के पश्चात् व्यक्ति को जो सफलता मिलती है वह उसे वास्तविक प्रसन्नता प्रदान करती है। यह प्रसन्नता ही व्यक्ति को आकर्षण भी प्रदान करने में सहायक होती है। जो लोग जीवन में ज्यादा संघर्ष अथवा परिश्रम नहीं करते लेकिन किन्हीं कारणों से सफलता के उच्च शिखरों तक पहुंचने में कामयाब हो जाते हैं उनको न तो अपनी सफलता पर उतना गर्व ही होता है। ऐसी सफलता कई बार व्यक्ति में उदात्त गुणों के विकास में भी बाधक बन जाती है। व्यक्ति के व्यवहार में कई दुर्बलताएं आ जाती हैं अतः उसका प्रभावशाली व आकर्षक व्यक्तित्व विकसित नहीं हो पाता। निश्चित रूप से ये सतत् संघर्ष व परिश्रम ही है जो व्यक्ति के आकर्षक व प्रभावशाली व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है।

क्या हम मांसाहारी हैं या शाकाहारी?

– नरसिंह सोनी आर्य

ईश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी बनाया है। अन्न, फल, मेवे, साग, सब्जी नाना प्रकार के ये सब मनुष्य के लिए उत्पन्न किये हैं, जानवरों/पशुओं के लिए नहीं। डिस्कवरी टी०वी० में आप देखते होंगे की, बडा जीव सिंह, चीता, भेड़िया आदि छोटे जीवों जैसे हिरण, गाय भैंस आदि जानवरों को मारकर खा जाते हैं। उदरपूर्ति करते हैं। ईश्वर ने उनको ऐसा ही बनाया है। मनुष्य के खानपान में और हिंसक पशु के खान–पान में यही एक विशेष फर्क हैं लेकिन मनुष्य के हाथ पैर व बुद्धि है वह किसी का गुलाम नहीं है। फिर वह इन्द्रियों का गुलाम क्यों हैं? क्या हम उदर पूर्ति के लिए खाते है या केवल स्वाद के लिए? मनुष्य ने किसी भी जीव को खाने से परहेज नहीं किया है। यहाँ तक की जिन्दगी भर दूध पिलाने वाली, घी मक्कखन, दही, मावा, मिठाईयां आदि खिलाने वाली गाय जिसको हमारी वैदिक सभ्यता में माता का दर्जा दिया हुआ है, काटके, मारके खा जाना, कितना घोर अनर्थ पाप करते हैं। इसका कोई प्रायश्चित नहीं होगा। अपनी जन्म देने वाली माँ को मार कर खा जाने से हजार गुना पाप लगता है। अपने अन्तरात्मा में बैठे हुए खुदा (ईश्वर) से कभी पूछ के देखों। मैं गलत कर रहा हूँ या सही, ऐसे उपयोगी पशु जिसका गोबर, मूत्र, घी उपयोगी है। अगर आपकी आत्मा में जरा भी इंसानियत है तो यही जवाब जायेगा कि यह गलत है। ऐसे कर्म को छोड़ दो। गौ–माता, पिता और गुरू की सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं है। मांसाहार सभी मनुष्य के स्वास्थ्य का दुश्मन और रोग उत्पन्न करने वाला भी है। ऐसा सभी डॉक्टर वैद्य भी कहते है। तो फिर स्वाद के गुलाम क्यों हैं? धर्म के नाम पर देवी–देवताओं के नाम पर बली देकर मांस का प्रसाद ग्रहण करना भी पाखण्ड है। अपने को ईश्वर को धोखा देना है। इससे भी बचो। मांस भक्षण मनुष्यत्व तो नहीं है राक्षसी कृत्य हैं सुख शान्ति का घोर विरोधी है। देखिये यजुर्वेद इस बारे में क्या कहता है–

"अहन्या यत्रमान्स्य पशुन्पाहि" यानि परमात्मा आज्ञा देता है कि हे पुरूष तू इन पशुओं को कभी मत मार और सबको सुख देने वाले पशुओं की रक्षा कर। महर्षि मनु इस बारें में क्या कहते हैं–

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खाद कश्चेति घातकाः।।

मनु अ० ५

यानि मारने की सलाह देने, मांस को काटने, पशु आदि को मारने, उनको मारने के लिए लेने और बेचने, मांस को पकाने, परोसने और खाने वाले ये सब पापकारी है।

विवेकहीन मनुष्य दुनिया का सबसे खतरनाक प्राणी है। वह किसी भी प्राणी को मारकर खाने में कोई परेज नहीं करता। हजारों टन चारा खा जाता है, हजारों लीटर पेट्रोल पी जाता है, कोयला, आदि कोई भी हाथ लगे सब खा जाता है। इसको कभी संतोष नहीं होता, तृप्ति नहीं होती। इन्द्रियों की तृप्ति में ही सारा जीवन नष्ट कर देता है। समय रहते जो चेत जाता है वही सुख को प्राप्त करता है।

फोन : ७०१४८०८४६६

21 दिवसीय वेद प्रचार में विद्वानों का बोल रहा ज्ञान

(रुद्रपुर), अक्टूबर। आर्य समाज रुद्रपुर (अधम सिंह नगर) में २१ दिवसीय वेद प्रचार का कार्यक्रम २७ सितम्बर से संचालित से रहा है। इसका समापन १८ अक्टूबर को होगा।

इस आशय की जानकारी रुद्रपुर आर्य समाज के प्रधान डॉ० सुरेश कुमार आर्य नें दी है। उन्होंने बताया कि २१ दिवसीय बृहद् यज्ञ, भजन, सत्संग एवं प्रवचन का उद्देश्य बढ़ रहे। जातिवाद सेवावाद, अलगवावाद आदि को जड़ से मिटाता है। कार्यक्रम में वैदिक प्रवक्ता–कृपाल सिंह वर्मा, भजनोपदेशक–कल्याण वैदिक आर्य, वनप्रस्थी–ओमपुरी, प्रभात कुमार आर्य, राजाराम नागर, दर्शनाचार्य वरूण भाग ले रहे है।

सन्यास आश्रम का वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ मना

स्व० शम्भू दयाल को बताया प्रेरणा

समाज को उनके जीवन से मिल रही है सीख

स्वर्गीय शम्भू दयाल सन्यास आश्रम गाजियाबाद का वार्षिककोत्सव धूम–धाम के साथ मानायाा गया। इस समारोह में क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि स्वामी आर्य वेदा जी मौजूद रहे।

इस अवसर पर आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने आश्रम के प्रेरणाश्रोत रहे स्व० शम्भू जी ने अपने जीवन काल में मानव समाज के कल्याण के लिए तमाम कार्य किए। यहीं कारण है वे आज भी हम लोगों के लिए प्रेरणा बने हुए है। उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि आज भी हमारे समाज में कुरीतियां पैर जमाए हुए है। शिक्षा का स्तर बढ़ने के बावजूद समाज इन कुरीतियों से बाहर नहीं निकल पा रहा है। ऐसी विषम परिस्थितियों में आर्य समाज के अनुयायियों का दायित्व और बढ़ जाता है।

विशिष्ट अतिथि अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने उस दौर में आर्य समाज की स्थापना की, उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानकर मानव कल्याण के लिए निरंतर काम करते रहे। इस मौके पर प्रमुख रूप से स्वामी सुरेन्द्र नंद स्वर्गीय ब्रह्मचारी आचार्य उदय वीर शास्त्रों, आचार्य जितेन्द्र आदि शामिल रहे।

ठा० विक्रम सिंह जन्मोत्सव पर अभिनन्दन

१७ सितम्बर, को दिल्ली में जन्मोत्सव पर ठ० विक्रम सिंह ट्रस्ट की ओर से आर्य प्रकाशकों एवं आर्य पुरोहितों का अभिनन्दन किया गया है। आर्य मित्र आर्य जगत् का सबसे पुरना पत्र है जो पिछले १२० वर्षों से प्रकाशित हो रहा है इस अवसर पर वैदिक विद्वान आचार्य ठा० विक्रम सिंह जी के जन्मोत्सव पर हार्दिक अभिनन्दन करते हैं एवं उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना परमपिता परमात्मा से करते हैं।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती– सभा मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, संचालक– गुरूकुल पूठ, हापुड़

शोक संवेदना

(लखनऊ) आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता एवं भूतपूर्व सांसद स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री की बहन श्रीमती कमला त्यागी का निधन हो गया। उनके निधन से आर्य समाज के लोगों में गहरा शोक व्याप्त है। दिवंगत कमला त्यागी एक जुझारू और कट्टर आर्य समाजी एक सक्रिय कार्यकर्ता रही आर्य मित्र परिवार परम् पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें और परिवार को यह असहनीय दुःख सहने की क्षमता प्रदान करें।

गुरू विरजानन्द गुरूकुल करतारपुर (पंजाब)

४७वां वार्षिक महोत्सव, ६ अक्टूबर से १५ तक विविध सम्मेलनों के साथ आयोजित है आप अवश्यमेव पधारें। गुरू विरजानन्द की जन्म स्थली के दर्शन भी करें।

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति समारोह

(वाराणसी–) आनन्द बाग में प्रतिवर्ष की तरह २६–३० अक्टूबर से १ नवम्बर को उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी एवं सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी भी कार्यक्रम में पधार रहे हैं। पूर्वञ्चल आर्य महासम्मेलन भी एक दिन होगा। इस आशय की जानकारी संयोजक प्रमोद आर्य ने दी।

ऋषि उद्यान अजमेर में
भव्य ऋषि मेला
२७–२६ अक्टूबर २०१७ तक
अवश्यमेव पधारें

गुरूकुल आमसेना उड़ीसा में
स्वर्णजयन्ती समारोह
२३–२५ दिसम्बर २०१७ तक
अवश्यमेव पधारें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब नवाशहर में
आर्य महासम्मेलन
५ नवम्बर २०१७, अवश्यमेव पधारें

ओइम्

काम आयें सर्वदा शुभकामनायें

– देव नारायण भारद्वाज

वह दिन का अन्तिम समय था। सब घर जाने को तैयार थे, तभी प्लान्ट में एक तकनीकी समस्या उत्पन्न हो गई और वह उसे दूर करने में जुट गया। जब तक वह कार्य पूरा करता, तब तक अत्यधिक देर हो गई। दरवाजे सील हो चुके थे और लाइटें बुझा दी गयीं थी। बिना हवा और प्रकाश के पूरी रात आइस प्लान्ट में फँसे रहने के भय से उसका कब्रगाह बनना तय था। घंटे बीत गये, तभी उसने किसी को दरवाजा खोलते पाया सिक्यूरिटी गार्ड टार्च लिए खड़ा था उसने उसे बाहर निकलने में मदद की उस व्यक्ति ने सिक्यूरिटी गार्ड से पूछा 'आपको कैसे पता चला कि मैं भीतर हूँ? गार्ड ने उत्तर दिया 'आपको कैसे पता चला कि मैं भीतर हूँ? गार्ड ने उत्तर दिया–'सर इस प्लान्ट में ५० लोग कार्य करते हैं, पर सिर्फ एक आप हैं जो सुबह मुझे 'हेलो' और शाम को जाते समय बाय कहते हैं। आज सुबह आप ड्यूटी पर आए थे, पर शाम को बाहर नहीं निकले इससे मुझे शंका हुई और मैं देखने चला आया वह नहीं जानता था कि किसी को छोटी सी शुभ कामना का सम्मान देना कभी उसका जीवन भी बचायेगा जब भी आप किसी से मिले तो गर्मजोशी भरी मुस्कराहट से उसका सम्मान करें। इससे आपको भी खुशी मिलेगी और सामने वाले व्यक्ति को भी हमें नहीं पता, पर हो सकता है कि वह आपके जीवन में भी कोई चमत्कार दिखा दें।

महात्मा विदुर ने अपने इसी अनुभव को अधिकाधिक गहराई से यों व्यक्त किया है–

चक्षुसा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम।
प्रसादयति लोकं यस्तं लोकोऽनुप्रसीदति।।

वि.नी. २.२५।।

अर्थात् राजा हो या प्रजा–कोई भी व्यक्ति, दूसरों को प्रेममयी दृष्टि से, मानसिक हित चिन्तन से, मधुरवाणी से और सहायतापूर्ण कर्म से–चार प्रकार से प्रसन्न करता है उसे दूसरे लोग भी प्रसन्न करते हैं।

शुभ कामना को अंग्रेजी में **Good Wishes** या सदेच्छा कहते हैं। इसके व्यवहार से हम जैसी इच्छा (कामना) दूसरे के लिए करते हैं वैसी ही वह हमारे लिए करता है। विशेषज्ञ कहते हैं कि जब आप सम्बन्धों को लोगों के प्रति कुछ शब्द कहकर ही नहीं, प्रत्युत दायित्व समझकर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखते हैं, उनसे सहायोग करते हैं, उनसे मधुरर्ता का व्यवहार करते हैं, तो उस समय आपके आस पास के वातावरण में सकारात्मक संदेशों का संचार होता है। आपने इस बात पर ध्यान देने का यत्न किया कि कब कब आपको क्षणिक ही सही मुस्कराने, हँसेन या गुनगुनाने का अवसर दिया। तो तब न सही अब अवश्य उनके लिए आप कह उठेंगे धन्यवाद। यह प्रवृत्ति आपके लिए मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक सुरक्षा के उपहार सिद्ध होगी।

मनुहार की पारस्परिकता पर वैदिक ऋषियों ने अनवरत बल दिया है। अथर्ववेद (का० १६ सूक्त, मन्त्र ४१) द्वारा हमको सुन्दर सटीक सामयिक मार्गदर्शन सहज ही सुलभ होता है–

कामेन मा काम आगन हृदयाद्घ्दयं परि।
यदमीषा मदो मनस्तदैतूप मामहि।।

अर्थात्–कामना से कामना उत्पन्न होती है। यह एक हृदय से दूसरे हृदय के प्रति हुआ करती है। दूसरा व्यक्ति मुझे चाहता है तो मैं भी उसे चाहने लगता हूँ। उसकी कामना ने मुझे में भी कामना को उत्पन्न किया है। वस्तुतः अनुराग पारस्परिक ही हुआ करता है। जो विद्वान–मनीषी–ज्ञानी जन हैं, उनका मन हमसे दूर न जाने पाये। वे भले किसी परिस्थितिवश हम से दूर हों, किन्तु उनका मन हमसे मिला रहे। शिक्षण संस्थान–गुरूकुल के आचार्य सदैव अपने शिष्य के साथ नहीं रह सकते। विद्यार्थी गुण तो समावर्तन के बाद गृहस्थ के कर्त्तव्यों का पालन करने हेतु दर–दर बिखर जायेंगे, किन्तु शिष्यगण अपने आचार्य के मन से जुड़े रहेगे, तो उनकी यही दीक्षा जीवन–उपलब्धियों की दक्षता में परिलक्षित होती दिखाई देगी। मन की कामनाओं का वास्तविक संचरण आचार्य–शिष्य तक ही सीमित न रहकर संसार की अनेकाशः भूमिकाओं में घटित होता है। पिता, पुत्र, माता, पुत्र, पुत्री, मित्र राजा, प्रजा, पति, पत्नी आदि अनेक क्षेत्रों में प्रभावी होता है इस कामना का पारस्परिक विनिमय मनोकामना के रूप में आन्तरिक होना चाहिए, केवल बाहरी कृत्रिम नहीं होना चाहिये, अन्यथा दुर्घटना घटित हो सकती है। आख्यान है कि रात्रि के घोर अन्धकार में कई चोर चोरी करने के लिए जा रहे थे। सामने से आते दिखाई दिए, सन्त तुलसी दास। चोरों ने समझा, अपशकुन हो गया। पकड़े जा सकते हैं। चोर ने पूँछा? तुम कौन हो? तुलसी दास ने उत्तर दिया जो तुम हो सो मैं हूँ। चोरों ने राहत की श्वाँस ली। तो, चलो हमारे साथ, तुलसीदास चल दिये। चोरों ने एक मकान की दीवार को खोद कर नकव लगाया। तुलसीदास को बाहर खड़े रहकर उनको यह काम सौंपा कोई दिखाई दे, तो अन्दर मिट्टी फेंक देना। हम लोग भाग खड़े होगें। चोरों ने भीतर जाकर सामन समेटा, तभी तुलसीदास ने भीतर की ओर मिट्टी फेंकना आरम्भ कर दिया। सभी चोर सामना छोड़कर बाहर निकल भागे और तुलसीदास से पूँछा? कौन दिखाई दिया बताओ, तुलसीदास ने कहा ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, वही दिखाई दिया। मैंने आप सबको सचेत कर दिया। सन्त तुलसीदास का उद्देश्य था अपने हृदय की भावना को चोरों के हृदयों तक सम्प्रेषित करना। चोर इसे ग्रहण कर लेते हैं तो चोर नहीं रहेगें, सन्त बन जायेंगे, यह हृदय तक से हृदय तक कामना शुभकामना का सम्प्रेषण हो जायेगा।

संसार को संचालित करने के लिए जब युवा दम्पती विवाह बन्धन में आबद्ध होते हैं, तब सभी प्रक्रियाओं को पूर्ण करने के वाद–आशीर्वाद वाचन से पूर्व उन दोनों को परस्पर हृदय दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु''। इसका रहस्य एक ८८ वर्षीय बुजुर्ग ने अपने पोते को उस दिन समझाया– जब वह अपनी नववधू के साथ ऊँची अवाजा में गुस्से के साथ बात कर रहा था। उस वृद्ध ने बताया कि क्रोध की आवाज कठोर–कर्कश व ऊँची होती है, जबकि प्यार के सुर मधुर–शान्त व मन्द होते हैं, क्योंकि दोनों हृदय के निकट होते हैं, जबकि क्रोधावेश में उनके हृदय की दूरी बढ़ती ही चली जाती है। विवाह संस्कार के हृदय–स्पर्श की भूमिका सन्तान, परिवार, समाज की सफलता की प्रवेशिका होती है। इतने पर भी संसार सागर, को तरने के लिए बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। सन्त तुलसीदास ने महाबली रावण की नम्रता का वर्णन, अपनी सहायता व स्वार्थ पूर्ति के लिए छद्मवेशी मारीचि से यों किया है–

नवनि नीच कै अति दुखदाई। जिमि अंकुस धनुउरण बिलाई।।
भय दायक खल की प्रियवानी। जिमि अकाल के कुसुभ भवानी।

नीच का झुकना (नम्र होना) भी अत्यन्त दुःखदाई होता है जैसे अंकुश, धनुष साँप और बिल्ली झुकते हैं तो मनुष्य की घोर हानि करते हैं। दुष्ट व्यक्ति की मीठी वाणी भी उसी प्रकार भयदायक होती है, जैसे बिना ऋतु के फल होते हैं। उदाहरणतः महानगर के प्रमुख मार्ग पर एक सेवानिवृत्त उच्चाधिकारी अपनी पत्नी के साथ जा रहे थे। स्कूटर पर दो युवक आये और नम्रता पूर्वक उनके चरण स्पर्श किये। उनका काम पूँछा और एक उस काम के लिए उच्चाधिकारी को स्कूटर पर बैठाकर आगे ले गया, पीछे दूसरें ने उनकी पत्नी के आभूण उतरवा लिए और दोनों रफूचक्कर हो गये। वेद विद्या में निष्णात युवा जब शासक प्रशासक बनते हैं तो वे मनो विज्ञान में दक्ष होते हैं। राजा के दरबार में राजधानी के संभ्रान्त नागरिक उपस्थित हुआ करते थे। कुछ दिन से एक नया व्यक्ति आकर्षक साज सज्जा के साथ आने लगा। राज उसको देखकर असहज अनुभव करता, वह बिल्कुल उसको पसन्द नहीं करता। राजा ने मन्त्री से परामर्श किया। उसने गुप्तचरों द्वारा खोज करायी, तो पता चला कि वह चन्दन का बड़ा व्यापारी है और उसने चन्दन का अत्यधिक भण्डारण कर रखा है, वह चाहता है कि इसकी विक्री हो जाये, तो उसके पास प्रभूत धनराशि आ जाये। व्यापारी मन ही मन सोंचता था कि राजा की मृत्यु हो तो उसकी अन्त्येष्टि में चन्दन का प्रयोग हो जायेगा और वह धन से मालामाल हो जायेगा।

मन्त्री ने गुप्त आख्या से राजा को अवगत कराये बिना ही राष्ट्रभृत महायज्ञ की योजना बना दी। राजधानी, यज्ञ धूमधाम से उठी। राजा, प्रजा, आचार्य सभी हर्ष विभोर हो गये। उस व्यापारी का सारा चन्दन, भण्डार महायज्ञ में उपयोग हो गया। उसको मन वांछित धन, लाभ

शेष पृष्ठ ७ पर

पृष्ठ ६ का शेष

काम आयें ...

हो गया। वह व्यापारी राज दरबार में यथापूर्व भाग लेता रहा। यज्ञादि के प्रति भरपूर शुभकामनायें करने लगा। अभी तक मन्त्री ने अपनी आख्या राजा को नहीं बतायी थी। राजा ने स्वयं ही अपने आन्तरिक भाव परिवर्तन की भूमिका मन्त्री को बतलानी शुरू कर दी। जिसका सार यह था कि वह व्यापारी मुझे बुरा नहीं अपितु अच्छा लगने लगा है। लोकोक्ति दिल से दिल को राहत चरितार्थ हो गई। अब मन्त्री ने भी अपनी गुप्त अन्वेषण एवं राष्ट्र भृत यज्ञ की योजना का राजा के समक्ष रहस्योदघाटन कर दिया।

ऋग्वेद के असीम क्षीर सागर में से उभरती है उसकी नवनीति तुल्य अन्तिम ऋचा जो राष्ट्र, परिवार में सम, संकल्प बद्धता का सन्देश देती हैं–

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सहासति।।

ऋ० १०.१९१.४११

हों सभी के सम हृदय संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े, सुख सम्पदा।।

अपने शिक्षण संस्थान में आचार्यगण इस ऋचा का पाठ या अर्थगायन ही नहीं इसका व्यावहारिक अभयास भी कराते रहे हैं, जो मुनि सनत्कुमार के गुरूकुल में आयोजित दीक्षान्त समारोह के द्रश्यदर्शन से स्पष्ट झलकता प्रतीत होता है। बृहत सभा भवन के बड़े मंच पर एक ओर आचार्यगण व दूसरी ओर राज्याधिकारी गण विराजममान थे। इन दोनों के मध्य स्थित उच्चासन पर गुरूकुल पति मुनि सनत्कुमार व राज्यअधिपति (सम्राट) विराज रहे थे। सामने के मैदान में सभी वे ब्रह्मचारी बैठे थे, जिन्हें दीक्षान्त (समावर्तन) के फलस्वरूप आगामी कार्यक्षेत्र के लिए अपने घर प्रस्थान करना था। मुनि सनत्कुमार ने ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कहा–अब तक शिक्षण काल में आप लोग से बहुत प्रश्नोत्तर हुए हैं। आज आप से अन्तिम प्रश्न करते हैं। बताइए जीवन में आगे क्या बनना चाहते हैं– अधिपति या बृहस्पतिः सभी का एक स्वर से सामूहिक उत्तर था बृहस्पतिः बृहस्पति। उत्तर सुनकर सम्राट महोच्चार कर उठे– मुनिमहराज की जय, जय, जय। समान संकल्प व हृदय वाले इन्हीं युवकों में से राजकाज के लिए चुने गये थे युवक ही कह सकेंगे, वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः'' (यजु० ६.२३) यथा अधिपति तथा प्रजा मति अर्थात यथा राज तथा प्रजा के अनुसार राष्ट्र में सब सबके, लिए शुभ कामना करने वाले होगे, तो सार्थक हो उठेगा, श्रुति, संकल्प, ''वयं स्माय पतयोरवीणाम्'' (ऋ० १०.१२१.१०) अर्थात् सभी राष्ट्र, नागरिक, यथायोग्य, धनैश्वर्यों के स्वामी होंगे।

नयन मुस्कायें, अधर उत्सव मनायें।
काम आये सर्वदा शुभ कामनायें।।

वरेण्यम् अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़ २०२००१ (उ०प्र०)

स्थापना 1886 ई.
पंजीकरण तिथि 5 जनवरी 1897

0522-2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

श्री नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ-226001
ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com

पत्रांक : 372

दिनांक : 28-9-2017

सेवा में,

प्रधान / मन्त्री / कोषाध्यक्ष,
द्वारा–श्री कस्तूर सिंह स्नेही,
आर्य समाज षहर,
आर्य समाज रोड,
मुजफ्फरनगर।

महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक–23–07–2017 के कम में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के पत्रांक–236 दिनांक–24–07–2017 के द्वारा आपको निर्देषित किया गया था, कि आर्य समाज षहर मुजफ्फरनगर की जॉच हेतु दिनांक–08 अगस्त,2017 को पूर्वाह्न 11.00 बजे समस्त मूल अभिलेखों (साप्ताहिक सत्संग पंजिका, साधारण सभा कार्यवाही पंजिका, अन्तरंग सभा कार्यवाही पंजिका, किरायेदारों से सम्बन्धित साक्ष्य (मय एग्रीमेन्ट सहित), किरायेदारों एवं निर्धारित किराये की सूची, जमा दषांष रसीद आदि लेकर उपस्थित होने के निर्देष दिये गये थे, परन्तु आप उपस्थित नहीं हुए और न ही कोई समय सीमा निर्धारित किये जाने की मांग की गई, जिसके कारण आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के आदेष पत्रांक–338 दिनांक– 14–09–2017 के द्वारा आर्य समाज शहर मुजफ्फरनगर की अन्तरंग सभा को स्थगित करते हुए, आर्य समाज षहर मुजफ्फरनगर की निश्पक्ष जॉच पूर्ण कराने एवं समाज सुचारू संचालन हेतु श्री प्रताप सिंह चौहान–संयोजक/प्रशासक के साथ सलाहकार समिति 6 (छः) के नियुक्त किया गया था। उपरोक्त आदेश के विरूद्ध श्रीमान् डिप्टी रजिस्ट्रार, फर्म सोसाईटीज एवं चिट्स, लखनऊ मण्डल, लखनऊ ने अपने पत्रांक–3447/आई–72/ लखनऊ दिनांक–25–09–2017 के द्वारा सभा द्वारा पारित उपरोक्त आदेश को दिनांक–13–10–2017 तक निष्प्रभावी कर दिया गया।

संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ में यह भी शिकायत प्राप्त हुई है, कि आर्य समाज शहर मुजफ्फरनगर का आज तक किसी भी बैंक में खाता नहीं खोला गया है और न ही कोई कैश–बुक, लेजर (आय–व्यय) का ब्यौरा लिखा जाता है, जबकि उक्त आर्य समाज में लगभग 22 किरायेदारो से किराया भी प्राप्त होता है तथा विवाद आदि हेतु बुकिंग से भी धन प्राप्त किया जाता है, जो वित्तीय अनियमिता एवं गबन की श्रेणी में आता है।

अतः आपको पुनः निर्देशित किया जाता है कि दिनांक–11–10–2017 को अपराह्न 03.00 बजे तक उपरोक्त सभी मूल अभिलेखों एवं एक छायाप्रति सहित सभा कार्यालय में उपस्थित होना सुनिश्चित करें, जिससे कि आर्य समाज शहर मुजफ्फरनगर के सम्बन्ध में प्राप्त शिकायतों के सम्बन्ध में न्यायोचित निर्णय लिया जा सकें।

संख्या एवं दिनांक तदैव।

प्रतिलिपिः–निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषितः–

1– श्रीमान् डिप्टी रजिस्ट्रार, फर्म सोसाईटीज एवं चिट्स, लखनऊ मण्डल, लखनऊ।
2– सम्पादक, आर्य मित्र साप्ताहिक, लखनऊ को इस आशय से प्रेषित कि वे यथावत् पत्र को प्रकाशित करें।

भवदीय,

(डॉ0 [illegible] सिंह)
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

विद्वान् लेखकों से निवेदन

आपके स्नेहिल आशीर्वाद से आर्य मित्र को सुन्दर बनाने का प्रयास रहता है यदि आपका चिन्तन लेख अथवा कविता के रूप में वैदिक संस्कार, विचार, प्रकाशनार्थ प्राप्त हो जायें तो हमारा सौभाग्य होगा। सुविधानुसार डाक/ई-मेल पर भी भेज सकते हैं। प्रतीक्षा रहेगी।

आपका अपना ही सदैव–
धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सम्पादक/मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, लखनऊ
सम्पर्क सूत्र– 9837402192, 0522–2286328

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

आर्य प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद, तथा विभिन्न आर्य महोत्सव की झलकियां

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सभा को सम्बोधित करते हुए प्रदेश की विभिन्न आर्य समाजों में सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी

आर्य समाज के प्रचार–प्रसार हेतु स्कूली बच्चों तथा ग्रामवासियों के साथ यज्ञ में भाग लेते सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी

आर्य प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद, जनपदीय आर्य महासम्मेलन मोदी नगर, सभा को सम्बोधित करते सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी

आर्य समाज भगवानपुर बांगर के वार्षिक सम्मेलन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी

स्व० सम्भूदयाल सन्यास आश्रम के वार्षिक उत्सव में आचार्य चन्द्रवेश जी के साथ आर्यवेश जी स्वामी सुरेन्द्रा नन्द जी तथा अनिल आर्य जी कार्यक्रम में भाग लेते हुए

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।